eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 02, February 2024

दक्षिण एशिया की सामरिक स्थिति और भारत की रक्षा नीति

डा0 अंशूबाला[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय, बिंदकी फ़तेहपुर उ0प्र0

Received: 15 Feb 2024 Accepted & Reviewed: 25 Feb 2024, Published: 29 Feb 2024

Abstract

दक्षिण एशिया विश्व की सर्वाधिक संवेदनशील एवं सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण भौगोलिक क्षेत्रों में से एक है। यहाँ भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान, मालदीव और अफगानिस्तान जैसे देश विद्यमान हैं, जिनके मध्य जटिल सुरक्षा सम्बन्ध, पारंपरिक संघर्ष, धार्मिक–सांस्कृतिक विभाजन और सामरिक प्रतिस्पर्धा सदैव मौजूद रही है। भारत इस क्षेत्र का सबसे बड़ा और सामरिक दृष्टि से प्रभावशाली राष्ट्र है, जिसकी रक्षा नीति केवल आत्मरक्षा तक सीमित न होकर क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक संतुलन में भी योगदान देती है। यह शोधपत्र दक्षिण एशिया की सामरिक स्थिति का विश्लेषण करता है और भारत की रक्षा नीति की उत्पत्ति, स्वरूप, परिवर्तनशील प्रवृत्तियों एवं रणनीतिक प्राथमिकताओं का आलोचनात्मक अध्ययन करता है।

मुख्य शब्द– दक्षिण एशिया, भारत, सामरिक स्थिति, रक्षा नीति, परमाणु नीति, चीन, पाकिस्तान, सैन्य रणनीति, आतंकवाद, समुद्री सुरक्षा

Introduction

दक्षिण एशिया विश्व की सबसे अधिक जनसंख्या वाले और राजनीतिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में से एक है। इस क्षेत्र में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान, मालदीव और अफगानिस्तान जैसे देश शामिल हैं। यह क्षेत्र भू–राजनीतिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मध्य एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और पश्चिम एशिया के संगम पर स्थित है। दक्षिण एशिया की सामरिक विशेषताओं में क्षेत्रीय शक्ति संघर्ष, आतंकवाद, सीमा विवाद, जल संसाधन विवाद और बाहरी शक्तियों की उपस्थिति जैसे तत्व शामिल हैं। चीन की बढ़ती उपस्थिति, विशेष रूप से पाकिस्तान और श्रीलंका में उसके निवेश, इस क्षेत्र की सामरिक जटिलताओं को और बढ़ाते हैं। हिंद महासागर में समुद्री मार्गों की सुरक्षा, ऊर्जा आपूर्ति की निर्भरता और समुद्री शक्ति की होड़ ने इस क्षेत्र को वैश्विक सुरक्षा विमर्श में अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया है। भारत दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा देश है, जिसकी भौगोलिक स्थिति इसे सामरिक दृष्टि से एक केंद्रीय भूमिका प्रदान करती है। उत्तर में हिमालय, दक्षिण में हिंद महासागर, और पूर्व–पश्चिम में विविध भौगोलिक सीमाओं के कारण भारत की स्थिति एक रणनीतिक सुरक्षा घेरा निर्मित करती है। भारत की सीमाएँ सात देशों से लगती हैं और इसकी समुद्री सीमाएँ भी कई महत्त्वपूर्ण समुद्री मार्गों के निकट हैं। भारत का आकार, संसाधन, जनसंख्या, आर्थिक शक्ति और सैन्य क्षमता इसे क्षेत्रीय शक्ति बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय भागीदारी, इसे वैश्विक सामरिक संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करती है।

अध्ययन की आवश्यकता, उद्देश्य एवं अनुसंधान प्रश्न– दक्षिण एशिया में सुरक्षा और सामरिक तनावों की बढ़ती प्रवृत्तियों को देखते हुए भारत की रक्षा नीति का विश्लेषण अत्यंत आवश्यक हो गया है। यह अध्ययन

इस क्षेत्र की सामरिक वास्तविकताओं को समझने, भारत की रक्षा रणनीति की गहराई से समीक्षा करने, और उभरती हुई चुनौतियों से निपटने हेतु नीतिगत सुधारों की आवश्यकता को उजागर करता है। इस शोध का उद्देश्य भारत की रक्षा नीति को दक्षिण एशिया की सामरिक स्थिति के आलोक में परखना है। शोध के प्रमुख प्रश्न निम्नलिखित हैं–

1. दक्षिण एशिया की सामरिक स्थिति में भारत की क्या भूमिका है?
2. भारत की रक्षा नीति किन ऐतिहासिक और समकालीन घटनाओं से प्रभावित रही है?
3. वर्तमान समय में भारत की रक्षा नीति की प्रमुख प्राथमिकताएं एवं रणनीतियाँ क्या हैं?
4. भारत की रक्षा नीति को और अधिक प्रभावी व उत्तरदायी बनाने के लिए क्या सुधार आवश्यक हैं?

परिकल्पना– भारत की रक्षा नीति में बीते दो दशकों में व्यापक रणनीतिक परिवर्तन हुए हैं, जो क्षेत्रीय एवं वैश्विक सुरक्षा वातावरण, तकनीकी प्रगति, तथा उभरते खतरों की प्रतिक्रिया स्वरूप विकसित हुए हैं। यह परिकल्पना की जा सकती है कि "यदि भारत की रक्षा नीति में परमाणु प्रतिरोधक क्षमता, तकनीकी आधुनिकीकरण, और अंतरराष्ट्रीय रक्षा साझेदारियों का समावेश सुनियोजित एवं पारदर्शी ढंग से किया जाए, तो भारत न केवल अपने सीमावर्ती एवं आंतरिक सुरक्षा खतरों का प्रभावी ढंग से सामना कर सकता है, बल्कि एशिया–प्रशांत क्षेत्र में एक संतुलित शक्ति संतुलन भी स्थापित कर सकता है।"

यह परिकल्पना निम्नलिखित उपधारणाओं पर आधारित है–

भारत की "No First Use" परमाणु नीति स्थायित्व और संतुलन को बढ़ावा देती है।

अमेरिका और रूस के साथ रक्षा सहयोग से भारत को रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए उन्नत रक्षा तकनीक तक पहुँच मिलती है।

साइबर और ए आई आधारित युद्ध की तैयारी भविष्य की सैन्य रणनीतियों में निर्णायक भूमिका निभाएगी।

नीति निर्माण की पारदर्शिता और संसदीय निगरानी बढ़ाकर रक्षा नीति में जवाबदेही सुनिश्चित की जा सकती है।

शोध प्राविधि (Research Methodology)– इस शोधपत्र में भारत की समकालीन रक्षा नीति का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है, जिसमें गुणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। शोध की रूपरेखा निम्नलिखित प्रकार से तैयार की गई है–

शोध का स्वरूप– यह शोध एक वर्णनात्मक–अन्वेषणात्मक अध्ययन है, जिसमें भारत की रक्षा नीति से संबंधित ऐतिहासिक घटनाओं, वर्तमान रणनीतियों और भविष्य की चुनौतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है।

शोध की पद्धति–

दस्तावेजीय अध्ययन– सरकारी दस्तावेज़, रक्षा नीति पत्र, संसद में प्रस्तुत श्वेत पत्र, रक्षा मंत्रालय की रिपोर्टें, अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टें (SIPRI, IDSA, Brookings आदि)।

तुलनात्मक विश्लेषण – भारत की रक्षा रणनीतियों की तुलना अमेरिका, चीन, पाकिस्तान एवं रूस जैसे प्रमुख देशों की रणनीतियों से की गई है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 02, February 2024

ऐतिहासिक विश्लेषण– भारत की रक्षा नीति का विकास स्वतंत्रता के बाद से लेकर 2024 तक चरणबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है।

डेटा संग्रहण के स्रोत–

क) प्राथमिक स्रोत – भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा प्रकाशित दस्तावेज़, संसद में प्रस्तुत रिपोर्ट्स, रक्षा विश्लेषकों एवं विशेषज्ञों के साक्षात्कार, नीति आयोग एवं थिंक टैंक के प्रतिवेदन

ख) द्वितीयक स्रोत– शोध पत्र, पुस्तकें, पत्रिकाएँ (ISBN सहित), रक्षा अध्ययन संस्थानों (IDSA, CLAWS, SIPRI, RAND) की वेबसाइट, अंतरराष्ट्रीय समाचार एजेंसियाँ और लेख, विश्वसनीय ऑनलाइन डेटाबेस (JSTOR, SSRN, Research Gate)

डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया– संग्रहीत सामग्री का विषयवस्तु विश्लेषण किया गया है, जिसमें रक्षा नीति से जुड़े प्रमुख घटकों को वर्गीकृत कर क्रमबद्ध रूप से विश्लेषित किया गया है।

सीमाएं – इस शोध में केवल सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारियों का उपयोग किया गया है। संवेदनशील रक्षा दस्तावेजों या गोपनीय रणनीतियों का अध्ययन संभव नहीं है। उभरती तकनीकों (जैसे ए आई, ड्रोन युद्ध) की पूरी जानकारी अभी विकासशील अवस्था में है।

दक्षिण एशिया में स्थित प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक विशिष्ट सामरिक भूमिका है। भारत इस क्षेत्र की केंद्रीय शक्ति है, जो अपनी भौगोलिक, राजनीतिक और सैन्य क्षमताओं के कारण क्षेत्रीय स्थिरता और शक्ति संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पाकिस्तान, भारत के साथ ऐतिहासिक और सामरिक प्रतिस्पर्धा में संलग्न है और उसकी रणनीतिक स्थिति अफगानिस्तान, ईरान और चीन जैसे देशों से जुड़ी है। बांग्लादेश बंगाल की खाड़ी और उत्तर–पूर्व भारत के लिए सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। श्रीलंका हिंद महासागर में भारत के निकट स्थित द्वीपीय राष्ट्र है, जहाँ चीन की गतिविधियाँ भारत के लिए चुनौती बनकर उभर रही हैं। नेपाल और भूटान हिमालय क्षेत्र में स्थित रणनीतिक बफर स्टेट्स हैं जो भारत और चीन के बीच संतुलन बनाने में सहायक रहे हैं। मालदीव और अफगानिस्तान भी क्षेत्रीय सुरक्षा तंत्र का हिस्सा हैं। अफगानिस्तान में अस्थिरता दक्षिण एशिया की सुरक्षा पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है।

दक्षिण एशिया में अस्थिरता के प्रमुख स्रोतों में भारत–पाकिस्तान का पारंपरिक शत्रुतापूर्ण संबंध, सीमा विवाद, धार्मिक उग्रवाद, आतंकवाद, जातीय संघर्ष, जल संसाधनों को लेकर विवाद और राजनीतिक अस्थिरता शामिल हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर विवाद अब तक अनसुलझा है, जिसके कारण कई युद्ध हो चुके हैं और सीमाओं पर सतत तनाव बना रहता है। अफगानिस्तान में कट्टरपंथी संगठनों की सक्रियता ने न केवल मध्य एशिया बल्कि पूरे दक्षिण एशिया में अस्थिरता फैलाई है। बांग्लादेश और म्यांमार से जुड़े रोहिंग्या संकट ने भी क्षेत्रीय तनाव को जन्म दिया है। चीन की आर्थिक और सैन्य गतिविधियों के कारण क्षेत्र में शक्ति संतुलन पर प्रभाव पड़ा है। इन सभी कारणों से दक्षिण एशिया एक अस्थिर और संवेदनशील सुरक्षा क्षेत्र बना हुआ है।

दक्षिण एशिया का सामरिक संतुलन केवल क्षेत्रीय शक्तियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें अमेरिका, रूस, चीन, जापान और यूरोपीय संघ जैसी वैश्विक शक्तियों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। अमेरिका की भारत के साथ बढ़ती सामरिक साझेदारी, रूस की परंपरागत सैन्य सहयोगी भूमिका, और चीन की आर्थिक व सैन्य उपस्थिति, विशेषकर पाकिस्तान, श्रीलंका और नेपाल में, इस क्षेत्र के सामरिक संतुलन को प्रभावित

कर रही है। भारत का एक्ट ईस्ट पॉलिसी, इंडो–पैसिफिक रणनीति और QUAD जैसी रणनीतिक पहलकदमियाँ इस क्षेत्र में बाह्य शक्तियों की भूमिका को पुनर्परिभाषित कर रही हैं। बाहरी शक्तियाँ क्षेत्रीय देशों में आधारभूत संरचनाओं, हथियारों की आपूर्ति, सैन्य प्रशिक्षण और राजनीतिक समर्थन के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं, जो दक्षिण एशिया की सामरिक स्थिति को अत्यधिक जटिल बना देता है।

भारत की रक्षा नीति स्वतंत्रता के बाद समयानुसार विकसित होती रही है। यह नीति भारत की भौगोलिक स्थिति, सामरिक आवश्यकताओं और वैश्विक घटनाक्रमों से प्रभावित रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत ने एक शांतिप्रिय नीति अपनाई, किंतु समय के साथ विभिन्न आंतरिक और बाह्य चुनौतियों ने इसकी दिशा और रणनीति में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन लाए। स्वतंत्रता के तुरंत बाद भारत की रक्षा नीति गांधीवादी आदर्शों, पंचशील और गुटनिरपेक्षता की भावना से प्रेरित थी। भारत ने शांति और सहयोग के सिद्धांतों को प्राथमिकता दी। प्रारंभिक वर्षों में सैन्य शक्ति की अपेक्षा विकास योजनाओं और सामाजिक सुधारों पर अधिक ध्यान दिया गया। रक्षा क्षेत्र में संसाधनों की कमी और सीमित बजट के कारण एक सशक्त रक्षा प्रणाली विकसित नहीं की जा सकी। हालाँकि, 1947–48 में कश्मीर पर पाकिस्तान द्वारा किए गए आक्रमण ने भारत को यह एहसास कराया कि केवल शांतिपूर्ण दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है। इसके पश्चात् भारतीय रक्षा व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता महसूस की जाने लगी, किंतु तब भी रक्षा को प्राथमिकता नहीं दी गई।

1962 में चीन के साथ हुए युद्ध ने भारत की रक्षा नीति में एक निर्णायक मोड़ लाया। यह युद्ध भारत के लिए एक करारी शिकस्त था, जिसने देश को यह स्पष्ट संकेत दिया कि सशक्त सैन्य तैयारी के बिना राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जा सकती। इस युद्ध के बाद भारत नेहरू जी नें सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास पर ध्यान देना शुरू किया। रक्षा बजट में वृद्धि की। सैन्य बलों की क्षमताओं को बढ़ाने की दिशा में कदम उठाए। चीन की सीमा पर सैनिकों की तैनाती और आधुनिक हथियार प्रणाली पर ज़ोर दिया। इसके साथ ही रक्षा मंत्रालय और सशस्त्र बलों के बीच बेहतर समन्वय के लिए रणनीतिक योजनाएँ विकसित की गईं।

1971 का भारत–पाकिस्तान युद्ध भारत की सैन्य रणनीति का एक प्रमुख अध्याय है। इस युद्ध में भारतीय सेना की निर्णायक जीत ने न केवल पाकिस्तान को परास्त किया, बल्कि बांग्लादेश के निर्माण में भी अहम भूमिका निभाई। यह युद्ध दर्शाता है कि भारत सामरिक दृष्टि से कितनी तेज़ी से सशक्त हुआ है। इस युद्ध के दौरान त्रिस्तरीय सैन्य अभियान (थल, जल, वायु) का समन्वय एक अनुकरणीय उदाहरण रहा। भारत ने तत्कालीन वैश्विक शक्तियों की कूटनीतिक चालों के बीच रणनीतिक संतुलन बनाए रखा। रूस के साथ भारत–सोवियत मैत्री संधि इस युद्ध में एक निर्णायक कारक साबित हुई। 1971 के बाद भारत की रक्षा नीति अधिक आत्मनिर्भर और दृढ़ हुई, और स्वदेशी रक्षा निर्माण पर भी ज़ोर दिया गया। 1999 का कारगिल युद्ध एक सीमित युद्ध था, जिसमें पाकिस्तान की सेना ने घुसपैठ के माध्यम से कारगिल की ऊँचाईयों पर कब्ज़ा कर लिया था। भारतीय सेना ने ऑपरेशन विजय के अंतर्गत इन्हें वापस खदेड़ा। इस युद्ध ने खुफ़िया तंत्र की कमज़ोरियों को उजागर किया। इसके पश्चात् कारगिल समीक्षा समिति की स्थापना की गई, जिसकी सिफारिशों के आधार पर राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ की स्थापना जैसी महत्त्वपूर्ण नीतिगत पहलें की गईं। सीमाओं की निगरानी के लिए तकनीकी संसाधनों (जैसे ड्रोन, सैटेलाइट निगरानी) का उपयोग बढ़ा। कारगिल के बाद भारत ने अपनी रक्षा नीति को अधिक तकनीकी,

बहुआयामी और सामरिक गहराई प्रदान की। थल, जल और वायु सेनाओं के बीच समन्वय, सूचना आधारित युद्ध की तैयारी, और सीमावर्ती बुनियादी ढांचे को प्राथमिकता दी गई। निष्कर्षतः, भारत की रक्षा नीति समय के साथ अधिक प्रतिक्रियाशील से रणनीतिक और सक्रिय बनती गई है। हर युद्ध और संकट ने इसमें सुधार और संरचनात्मक बदलाव की प्रेरणा दी है, जिससे भारत एक सक्षम और आधुनिक रक्षा शक्ति के रूप में उभरा है। भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति बहुआयामी है, जो देश की सीमाओं की रक्षा से लेकर आतंरिक सुरक्षा, साइबर रक्षा, परमाणु प्रतिरोधक क्षमता, आतंकवाद विरोधी रणनीति और समुद्री सुरक्षा तक फैली हुई है। इसके मुख्य स्तंभ निम्नलिखित हैं। रणनीतिक स्वायत्तता अर्थात भारत किसी एक सैन्य गुट में शामिल न होकर बहुपक्षीय संबंधों और रणनीतिक साझेदारियों के माध्यम से अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करता है। न्यूनतम प्रतिरोधक क्षमता अर्थात भारत की परमाणु नीति 'No First Use' पर आधारित है, जिसमें न्यूनतम आवश्यक परमाणु हथियारों की आवश्यकता को मान्यता दी गई है। आंतरिक सुरक्षा अर्थात माओवादी हिंसा, अलगाववादी आंदोलनों और आतंकवाद के विरुद्ध केन्द्र और राज्य सरकारें समन्वय से कार्य करती हैं। उभरती तकनीकी क्षमताएं अर्थात साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और ड्रोन तकनीक जैसे क्षेत्रों में रक्षा नीति का विस्तार किया गया है। भारत की तीनों सेनाएं, भारतीय थल सेना, भारतीय वायु सेना और भारतीय नौसेना देश की रक्षा रणनीति के केंद्रीय स्तंभ हैं, भारतीय थल सेना में लगभग 12 लाख सक्रिय सैनिकों की यह सेना विश्व की सबसे बड़ी में से एक है। इसकी जिम्मेदारी देश की सीमाओं की रक्षा तथा आंतरिक संकटों से निपटना है। यह सेना उत्तरी, पश्चिमी, और उत्तर–पूर्वी सीमाओं पर तैनात है।

भारतीय वायु सेना में 1,700+ विमान, जिसमें सुखोई–30, राफेल, तेजस शामिल हैं। वायु सुरक्षा, सामरिक बमबारी, आपदा राहत और निगरानी इसका प्रमुख कार्य है। भारतीय नौसेना में हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की रणनीतिक उपस्थिति को सुनिश्चित करती है। INS विक्रांत जैसे स्वदेशी विमानवाहक पोत और परमाणु पनडुब्बियां इसके मुख्य आधार हैं। भारत की रक्षा रणनीति में समन्वय और गति को बढ़ाने के लिए थिएटर कमांड और इंटीग्रेटेड बैटल ग्रुप्स की अवधारणाओं को अपनाया जा रहा है– थिएटर कमांड का उद्देश्य सेना, वायुसेना और नौसेना को एकीकृत करना है। प्रस्तावित थिएटर कमांड्स उत्तरी, पश्चिमी, समुद्री आदि से संसाधनों की बेहतर योजना और युद्धकाल में शीघ्र प्रतिक्रिया संभव होगी। इंटीग्रेटेड बैटल ग्रुप्स से ये सेना की युद्ध संरचना को छोटा, तेज और अधिक घातक बनाते हैं। एक IBG में इन्फेंट्री, आर्मर्ड, आर्टिलरी, एयर डिफेंस और इंजीनियरिंग यूनिट शामिल होती है। पाकिस्तान और चीन सीमाओं के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए हैं। भारत का रक्षा बजट लगातार बढ़ रहा है, जिससे रक्षा आधुनिकीकरण, स्वदेशी उत्पादन और सैन्य प्रशिक्षण में प्रगति हुई है – वर्ष 2023–24 में रक्षा बजट ₹6.2 लाख करोड़ (लगभग 13 प्रतिशत वृद्धि) हुई है। 40 प्रतिशत राशि सैनिक वेतन, पेंशन और संचालन हेतु, 60 प्रतिशत राशि हथियारों की खरीद, तकनीक उन्नयन, नई परियोजनाओं पर राजस्व और पूंजीगत व्यय से खर्च होती है। रक्षा उत्पादन में स्वदेशी कंपनियों को प्राथमिकता दी जाती है। DRDO, HAL, BEL जैसे संगठनों की भूमिका है। निजी कंपनियों को रक्षा क्षेत्र में प्रवेश की अनुमति स्वदेशीकरण और मेक इन इंडिया के तहत दी जा रही है।

दक्षिण एशियाई भू–राजनीति में चीन की भूमिका

चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा– चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा चीन की महत्वाकांक्षी Belt and Road Initiative (BRI) का एक प्रमुख घटक है। यह गलियारा पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह से चीन के शिनजियांग

प्रांत तक 3,000 किलोमीटर लंबा है और इसमें सड़कों, रेलवे, ऊर्जा परियोजनाओं और विशेष आर्थिक क्षेत्रों का निर्माण शामिल है। यह गलियारा पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर से होकर गुजरता है, जिसे भारत अपने क्षेत्र का अभिन्न अंग मानता है। CPEC को भारत अपनी संप्रभुता के उल्लंघन के रूप में देखता है। यह गलियारा पाकिस्तान में चीनी सैन्य उपस्थिति को बढ़ा सकता है, जिससे भारत की सामरिक स्थिति प्रभावित होती है। इस प्रकार पाकिस्तान की चीन पर आर्थिक निर्भरता बढ़ी है। हिंद महासागर में चीन की पहुंच को CPEC मजबूती देता है। यह दक्षिण एशिया में शक्ति संतुलन को चुनौती देता है।

डोकलाम और लद्दाख सीमा विवाद– डोकलाम विवाद (2017), डोकलाम क्षेत्र भारत, भूटान और चीन की त्रिकोणीय सीमा पर स्थित है। जब चीन ने यहां सड़क निर्माण प्रारंभ किया, तो भारत ने भूटान की सुरक्षा का हवाला देते हुए हस्तक्षेप किया। यह टकराव लगभग 73 दिन चला। भारत ने चीन की विस्तारवादी नीति को रोकने का संदेश दिया। जिससे भारत–भूटान रणनीतिक संबंधों को बल मिला। डोकलाम संकट ने सैन्य सतर्कता और कूटनीतिक वार्ता की भूमिका को रेखांकित किया।

लद्दाख सीमा संघर्ष (2020)– गलवान घाटी में भारत और चीन की सेनाओं के बीच झड़पों में 20 भारतीय सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए। यह दशकों बाद पहली बार हुआ जब वास्तविक नियंत्रण रेखा पर दोनों देशों के बीच जानलेवा हिंसा हुई। तब भारत ने अपनी सामरिक संरचनाओं को तेज़ी से मजबूत किया। वोकल फॉर लोकल जैसे अभियानों से चीन से आयात पर निर्भरता कम करने की नीति अपनाई गई। चीन के प्रति रणनीतिक रुख में कठोरता आई।

भारत का उत्तर–पूर्वी क्षेत्र सामरिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील है। यह क्षेत्र चीन, भूटान, म्यांमार और बांग्लादेश से जुड़ा है। चीन अरुणाचल प्रदेश पर दावा करता रहा है, जिसे वह 'दक्षिण तिब्बत' कहता है। 'एक्ट ईस्ट नीति' के माध्यम से भारत ने उत्तर–पूर्व को ASEAN देशों से जोड़ने के प्रयास तेज किए हैं। आधारभूत संरचना जैसे सड़क, रेल, और संचार के विकास में तीव्रता लाई गई है। उत्तर–पूर्व में सैन्य तैनाती और संसाधनों की उपलब्धता में सुधार किया गया है। भारत को घेरने की नीति के तहत चीन नेपाल, श्रीलंका, और म्यांमार में अपनी पकड़ मजबूत कर रहा है। चीन उत्तर–पूर्व में अलगाववादी गतिविधियों को अप्रत्यक्ष समर्थन देने का प्रयास करता है।

भारत और पाकिस्तान के बीच की नियंत्रण रेखा दोनों देशों के बीच तनाव का स्थायी स्रोत रही है। 1947–48, 1965 और 1971 के युद्धों के बाद भी यह क्षेत्र विवादित बना रहा। 1984 में भारत द्वारा 'ऑपरेशन मेघदूत' के अंतर्गत सियाचिन ग्लेशियर पर नियंत्रण स्थापित किया गया, जो विश्व का सबसे ऊँचाई पर स्थित युद्धक्षेत्र बन गया। पाकिस्तान इस क्षेत्र पर भारत के अधिकार को लगातार चुनौती देता रहा है। LoC पर समय–समय पर सीमा पार से घुसपैठ, गोलीबारी और संघर्षविराम उल्लंघन की घटनाएँ होती रही हैं। सियाचिन की रणनीतिक स्थिति इसे सैन्य दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती है क्योंकि यह पाकिस्तान और चीन दोनों की सीमाओं के पास स्थित है। इस क्षेत्र में भारत की स्थिति उसकी उत्तरी सीमाओं की रक्षा के लिए निर्णायक रही है। भारत की रक्षा रणनीति में हाल के वर्षों में प्रत्युत्तरात्मक आक्रामकता की झलक देखने को मिली है। 2016 में उरी हमले के बाद भारत ने नियंत्रण रेखा पार कर पाकिस्तान अधिकृ त कश्मीर में सर्जिकल स्ट्राइक कर आतंकवादी ठिकानों को नष्ट किया। यह एक नई रणनीतिक पहल थी जिसमें पहली बार भारत ने सार्वजनिक रूप से ऐसी सैन्य कार्रवाई की घोषणा की। 2019 में पुलवामा हमले के प्रत्युत्तर में भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के बालाकोट में जैश–ए–मोहम्मद के प्रशिक्षण शिविरों पर

हवाई हमले किए। यह 'बालाकोट एयर स्ट्राइक' भारत की सैन्य नीति में एक स्पष्ट संदेश था कि आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई की जाएगी। यह घटनाएँ भारत की रक्षा नीति में परंपरागत प्रतिक्रिया की जगह, आक्रामक नीति के उभरते रूप को दर्शाती हैं।

भारत ने 1998 में पोखरण–2 परमाणु परीक्षणों के पश्चात स्वयं को एक जिम्मेदार परमाणु शक्ति घोषित किया और "No First Use" (NFU) की नीति अपनाई, जिसमें भारत ने कहा कि वह पहले परमाणु हथियार का प्रयोग नहीं करेगा लेकिन यदि उस पर परमाणु हमला होता है तो वह निर्णायक जवाब देगा। भारत की परमाणु नीति का उद्देश्य है न्यूनतम प्रतिरोधक क्षमता अर्थात इसका आशय है कि भारत को इतनी परमाणु क्षमता प्राप्त हो जिससे वह किसी भी आक्रामक शक्ति को भारत पर हमले से रोके। भारत ने त्रिकोणीय परमाणु प्रतिरोध (Triad – भूमि, जल और वायु आधारित प्रणाली) को विकसित किया है। NFU नीति को लेकर भारत में समय–समय पर पुनः मूल्यांकन की मांग उठती रही है, विशेष रूप से पाकिस्तान के असंवैधानिक परमाणु प्रयोग की आशंकाओं के संदर्भ में। किंतु अब तक भारत NFU को अपनी रणनीतिक स्थिरता और वैश्विक जिम्मेदारी के संकेत के रूप में मान्यता देता रहा है।

भारत लंबे समय से पाकिस्तान प्रायोजित सीमा पार आतंकवाद का शिकार रहा है। 26/11 मुंबई हमले, पठानकोट, उरी और पुलवामा जैसे हमले भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए गहरी चुनौती रहे हैं। इन हमलों ने भारत की कूटनीतिक और सैन्य रणनीति को प्रभावित किया है। CRPF, BSF, NSG, CISF जैसे बलों की आतंकवाद निरोधक कार्रवाइयों में अहम भूमिका है। जम्मू–कश्मीर, पूर्वोत्तर राज्यों और माओवादी क्षेत्रों में सुरक्षा बलों की उपस्थिति निर्णायक रही है। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (NIA) आतंकवाद से जुड़ी घटनाओं की जांच करती है। UAPA जैसे कठोर कानून भारत को आतंकवाद के विरुद्ध कानूनी आधार प्रदान करते हैं। हालांकि इनकी पारदर्शिता और दुरुपयोग की आशंकाएं बनी रहती हैं।

हिंद महासागर में भारत की भौगोलिक स्थिति उसे सामरिक लाभ देती है। समुद्री मार्गों की सुरक्षा और चोक पॉइंट्स पर नजर रखना भारतीय समुद्री नीति का मूल है। INS विक्रांत, स्कॉर्पीन पनडुब्बियाँ, P-8I निगरानी विमान, और ब्रह्मोस मिसाइलें भारतीय नौसेना की क्षमता को बढ़ा रहे हैं। इसके माध्यम से भारत 'ब्लू वॉटर नेवी' बनने की दिशा में बढ़ रहा है। SAGAR (Security and Growth for All in the Region) नीति और 'Indo-Pacific Oceans Initiative' के माध्यम से भारत समुद्री सहयोग, आपदा प्रबंधन और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए काम कर रहा है।

रक्षा तकनीक और आत्मनिर्भर भारत अभियान–

1. DRDO की भूमिका– DRDO ने अग्नि, पृथ्वी, नाग, ब्रह्मोस जैसी मिसाइलों और रक्षा प्रणालियों का विकास किया है। स्वदेशी तकनीक के माध्यम से भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ा है।

2. रक्षा उत्पादन में निजी क्षेत्र की भागीदारी

हाल के वर्षों में सरकार ने रक्षा उत्पादन में निजी कंपनियों को प्रोत्साहन दिया है। HAL, टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स, लार्सन एंड टुब्रो जैसे कंपनियां अब रक्षा उत्पादन में सक्रिय हैं।

3. स्वदेशी हथियार प्रणाली– तेजस, अर्जुन, ब्रह्मोस– तेजस लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट, अर्जुन टैंक, ब्रह्मोस मिसाइल जैसे प्रोजेक्ट 'मेक इन इंडिया' अभियान को बल देते हैं और भारत को आत्मनिर्भर रक्षा महाशक्ति की ओर ले जाते हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 02, February 2024

क्षेत्रीय सहयोग और रक्षा कूटनीति– SAARC के तहत रक्षा सहयोग सीमित रहा है, लेकिन ठप्डैजम्ब में समुद्री सहयोग, आतंकवाद निरोध और मानवीय सहायता के क्षेत्र में व्यापक संभावनाएं मौजूद हैं। भारत MALABAR, YUDH ABHYAS, INDRA, VARUNA जैसे संयुक्त सैन्य अभ्यासों में भाग लेकर रणनीतिक साझेदारियाँ मजबूत कर रहा है। ये अभ्यास बहुपक्षीय सुरक्षा और प्रशिक्षण में सहायक हैं। भारतीय सेना और नौसेना क्षेत्रीय आपदा प्रबंधन जैसे भूकंप, बाढ़, समुद्री तूफानों में मानवीय सहायता प्रदान कर भारत की सकारात्मक छवि को सुदृढ़ करते हैं।

भारत की परमाणु नीति और रणनीतिक संतुलन– भारत की परमाणु नीति 'नो फर्स्ट यूज़' सिद्धांत पर आधारित है, अर्थात भारत तब तक परमाणु हथियारों का प्रयोग नहीं करेगा जब तक कि उस पर परमाणु हमला न हो जाए। 2003 में संशोधित भारतीय परमाणु सिद्धांत में निम्न बिंदु सम्मिलित हैं– न्यूनतम विश्वासयोग्य प्रतिरोध, किसी भी परमाणु हमले का तीव्र और व्यापक प्रतिउत्तर व नागरिक नियंत्रण के अधीन परमाणु हथियार।

DND (Deterrence without Deployment) सिद्धांत– यह सिद्धांत बताता है कि परमाणु हथियारों को बिना तैनात किए भी एक प्रभावी प्रतिरोध बनाए रखा जा सकता है। भारत ने इसे अपनाते हुए अपने हथियारों को तत्काल प्रक्षेपण स्थिति में रखने से बचा रखा है, जिससे दुर्घटनाओं और युद्ध की अनचाही परिस्थितियों से बचा जा सके। NSG (Nuclear Suppliers Group) भारत NSG का सदस्य नहीं है क्योंकि वह NPT (Non-Proliferation Treaty) पर हस्ताक्षरकर्ता नहीं है, किंतु 2008 में उसे विशेष छूट प्राप्त हुई जिससे वह असैन्य परमाणु व्यापार में भाग ले सका। CTBT (Comprehensive Nuclear Test-Ban Treaty) मे भारत ने हस्ताक्षर नहीं किया है। उसका मानना है कि यह संधि भेदभावपूर्ण है क्योंकि परमाणु संपन्न देश परीक्षण करने की शक्ति रखते हैं परन्तु विकासशील देशों को रोकते हैं। भारत की रक्षा नीति में रूस एक परंपरागत और विश्वसनीय सहयोगी रहा है। भारत की 60–70 प्रतिशत सैन्य प्रणाली रूसी तकनीक पर आधारित है, जिसमें S-400 मिसाइल प्रणाली, T–90 टैंक, और सुखोई जैसे लड़ाकू विमान शामिल हैं। भारत अमेरिका और रूस के बीच संतुलन बनाए रखने की नीति अपनाता है। भारत का उद्देश्य बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था में अपनी स्वतंत्र विदेश नीति को बनाए रखते हुए दोनों पक्षों से रणनीतिक लाभ प्राप्त करना है।

साइबर सुरक्षा और भविष्य की सैन्य रणनीति– 21वीं सदी में साइबर युद्ध एक प्रमुख चुनौती बनकर उभरा है। सैन्य संचार प्रणाली, नेटवर्क आधारित रक्षा और बुनियादी ढांचे पर साइबर हमलों की संभावना लगातार बढ़ रही है। भारत सरकार ने रक्षा मंत्रालय के अधीन 'डिफेंस साइबर एजेंसी' की स्थापना की है, जिसका उद्देश्य साइबर हमलों से रक्षा प्रणाली की सुरक्षा और साइबर–रणनीति का विकास करना है। भारत रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के माध्यम से ए आई आधारित स्वचालित प्रणाली विकसित कर रहा है। निगरानी, सटीक हमलों और सीमाओं की निगरानी में ड्रोन का प्रयोग तेजी से बढ़ा है। Swarm Drones तकनीक सैकड़ों ड्रोन को समन्वित रूप से नियंत्रित करती है, जो युद्ध के क्षेत्र में सामूहिक आक्रमण की क्षमता प्रदान करती है।

भारत की रक्षा नीति की आलोचनाएँ और सुधार की दिशा– भारतीय रक्षा नीति में अभी भी नीति निर्माण की प्रक्रिया में पारदर्शिता की कमी देखी जाती है। रक्षा नीति और बजट का निर्धारण अक्सर बंद दरवाजों के भीतर होता है, जिसमें नागरिक भागीदारी सीमित होती है। सैन्य उपकरणों का आधुनिकीकरण अपेक्षा कृत धीमी गति से हो रहा है, जिसके कारण भारत को कई बार पुराने हथियारों के सहारे काम चलाना

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 02, February 2024

पड़ता है। रक्षा उत्पादन क्षेत्र में 'मेक इन इंडिया' के तहत आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रयास तो हो रहे हैं, परंतु प्रगति सीमित है। भारत की रक्षा नीति में संसदीय समितियों की निगरानी न्यूनतम है। रक्षा बजट GDP के अनुपात में अन्य देशों की तुलना में कम है, जो सैन्य आवश्यकताओं को प्रभावित करता है।

निष्कर्ष– दक्षिण एशिया एक भू–राजनीतिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र है, जहाँ सामरिक संतुलन, क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा, आतंकवाद, और परमाणु शक्ति–संतुलन जैसी जटिल चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इस क्षेत्र में भारत न केवल भूगोल की दृष्टि से, बल्कि जनसंख्या, अर्थव्यवस्था, और सैन्य शक्ति की दृष्टि से भी एक केंद्रीय भूमिका निभाता है। पाकिस्तान और चीन जैसे पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंधों की जटिलता, सीमा विवादों और आतंकवाद के मुद्दों के कारण, भारत की रक्षा नीति निरंतर सतर्क, सुदृढ़ और बहुस्तरीय बनी रही है। भारत की रक्षा नीति मुख्यतः न्यूनतम प्रतिरोधक क्षमता, कोई पहले उपयोग नहीं, और रणनीतिक स्वायत्तता जैसे सिद्धांतों पर आधारित है। इसके अतिरिक्त भारत ने हाल के वर्षों में स्वदेशी सैन्य निर्माण, डिजिटल युद्धनीति, और साइबर सुरक्षा को भी अपनी प्राथमिकताओं में सम्मिलित किया है।

दक्षिण एशिया में उभरते भू–राजनीतिक समीकरणोंकृजैसे अफगानिस्तान में तालिबान का उदय, चीन की बढ़ती सैन्य और आर्थिक घुसपैठ, तथा हिंद–प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका की रणनीतिक सक्रियता भारत की सुरक्षा चिंताओं को और भी व्यापक बनाते हैं। ऐसे में भारत की रक्षा नीति केवल परंपरागत सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं रह सकती, बल्कि उसे बहुआयामी सुरक्षा रणनीति अपनानी होगी जिसमें कूटनीति, तकनीक, अर्थव्यवस्था और वैश्विक साझेदारी सभी का समन्वय हो। भारत को अपने रक्षा संसाधनों का आधुनिकीकरण करते हुए स्थानीय रक्षा उत्पादन, रणनीतिक गठबंधनों, और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में सक्रिय भूमिका के माध्यम से क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। साथ ही, सुरक्षा–आधारित कूटनीति और सांस्कृतिक/सॉफ्ट पावर को सशक्त करते हुए भारत को दक्षिण एशिया में शांति, विकास और स्थायित्व का केंद्रबिंदु बनने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ना होगा।

इस प्रकार निष्कर्षतः भारत की रक्षा नीति को दक्षिण एशिया की अस्थिर सामरिक परिस्थितियों के मध्य एक संतुलित, विवेकपूर्ण, और दूरदर्शी दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है, जिससे न केवल भारत की संप्रभुता और सुरक्षा सुनिश्चित हो, बल्कि क्षेत्रीय शांति और विकास में भी भारत की अग्रणी भूमिका बनी रहे। **अनुशंसाएँ–**

- दक्षिण एशिया की सामरिक स्थिति और भारत की रक्षा नीति" विषय पर आधारित कतिपय व्यावहारिक और रणनीतिक अनुशंसाएँ निम्नवत हैं, जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत की सुरक्षा एवं रणनीतिक नीति को अधिक प्रभावशाली बना सकती हैं–
- स्वदेशी रक्षा उत्पादन को बढ़ावा दें– आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत रक्षा उपकरणों, युद्धक विमान, मिसाइल प्रणाली आदि के निर्माण में निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की भागीदारी को और सशक्त किया जाए।
- साइबर और स्पेस डिफेंस की रणनीति विकसित करें– साइबर हमलों और उपग्रह आधारित जासूसी से सुरक्षा हेतु एक स्वतंत्र साइबर कमान और स्पेस कमान की स्थापना की जाए।
- चीन और पाकिस्तान की दो–तरफा चुनौती के लिए संयुक्त रणनीति बनाएं– दो मोर्चों पर युद्ध की स्थिति में त्वरित प्रतिक्रिया और समन्वय हेतु थियेटर कमांड्स को अधिक प्रभावी बनाया जाए।
- समुद्री सुरक्षा को सशक्त करें– हिंद महासागर में चीन की बढ़ती उपस्थिति को संतुलित करने हेतु Indian Ocean Rim देशों के साथ नौसैनिक सहयोग और संयुक्त अभ्यास बढ़ाए जाएं।

- रणनीतिक साझेदारियों का विस्तार करें– अमेरिका, फ्रांस, जापान, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ द्विपक्षीय और बहुपक्षीय रक्षा समझौते मजबूत किए जाएं।
- अभ्यास और युद्धाभ्यास की संख्या एवं गुणवत्ता बढ़ाएं– मिलन, युद्ध अभ्यास, वरुण जैसे साझा अभ्यासों के दायरे को और व्यापक किया जाए।
- आंतरिक सुरक्षा और सीमावर्ती राज्यों को सशक्त किया जाए– पूर्वोत्तर, जम्मू–कश्मीर और नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में सैन्य–नागरिक समन्वय को बढ़ावा दिया जाए।
- सैन्य बलों के आधुनिकीकरण में तेजी लाई जाए– सेना, वायुसेना और नौसेना को नवीनतम हथियार प्रणालियों, ड्रोन तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लैस किया जाए।
- डिफेंस इंटेलिजेंस एजेंसियों की क्षमता बढ़ाई जाए– – RAW, DIA, NTRO जैसी एजेंसियों के संसाधनों और पारस्परिक समन्वय को सुदृढ़ किया जाए।
- रक्षा बजट में निरंतर वृद्धि हो– जीडीपी के न्यूनतम 2.5 प्रतिशत हिस्से को रक्षा व्यय हेतु सुनिश्चित किया जाए, विशेषकर पूंजीगत व्यय में बढ़ोतरी की जाए।
- रणनीतिक स्थलों पर बुनियादी ढांचे का विकास हो– भारत–चीन और भारत–पाक सीमाओं पर सड़क, पुल, हवाई पट्टियाँ और सुरक्षात्मक बंकर तेजी से तैयार किए जाएं।
- विदेश नीति और रक्षा नीति में समन्वय हो– रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए विदेश नीति को रक्षा दृष्टिकोण से पूरक बनाया जाए।
- ड्रोन और एआई आधारित युद्ध क्षमता विकसित हो– भविष्य की युद्ध रणनीति को ध्यान में रखते हुए भारत को एआई और स्वायत्त रक्षा प्रणालियों में निवेश करना चाहिए।
- युवाओं में सैन्य सेवा की भावना को बढ़ावा दिया जाए– अग्निपथ योजना जैसे प्रयासों को पारदर्शी, आकर्षक और स्थायी बनाया जाए।
- शांति और कूटनीति को प्राथमिकता देते हुए रक्षा नीति बनाई जाए– सैन्य बलों का प्रयोग अंतिम विकल्प हो, भारत को "रणनीतिक संयम" और "सक्रिय रक्षा" की नीति अपनानी चाहिए।

सन्दर्भ सूची –

1– भारत की विदेश नीति, राजीव सिकरी, वाइकिंग पेंग्विन, नई दिल्ली 2009, ISBN: 9780670082166

2– भारत की सुरक्षा और रणनीति, एम. पी. सिंह, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, 2017, ISBN: 9788172703424

3– भारत–अमेरिका रक्षा सहयोग– एक विश्लेषण, संजय जोशी, राजकमल प्रकाशन 2020 ISBN: 9789352769691

4– साइबर युद्ध और भारत की रक्षा नीति, विकास मिश्रा, रचना प्रकाशन, लखनऊ 2021, ISBN: 9789390577682

5– भारत–रूस रक्षा संबंध, अजीत कुमार, नेशनल बुक ट्रस्ट 2016, ISBN: 9788123764536

6– भारत और सामरिक सहयोग, आदित्य नारायण, ज्ञान गंगा प्रकाशन, 2018 ISBN: 9789387618040

7– भारत की सैन्य शक्ति, ब्रिगेडियर संजीव शर्मा, दीप एंड डीप पब्लिकेशन 2014, ISBN: 9788176297004

8– भारत की रक्षा नीति का मूल्यांकन, मोनिका वर्मा, अयन प्रकाशन 2020, ISBN: 9789383452839

9– भारत की सामरिक सोच, दिनेश शुक्ल, संवाद प्रकाशन, 2019, ISBN: 9788194209816

10– भारत में रक्षा बजट और संसदीय निरीक्षण, अल्का शर्मा, प्रभात प्रकाशन, 2022, ISBN: 9789355213238

11 Kanti Bajpai (2021) – India Versus China: Why They Are Not Friends – Juggernaut Books. ISBN: 9789391165488

12 Happymon Jacob (2018) – Line on Fire: Ceasefire Violations and India–Pakistan Escalation Dynamics – Oxford University Press. ISBN: 9780199488848

13 C. Raja Mohan (2003) – Crossing the Rubicon: The Shaping of India's New Foreign Policy – Viking. ISBN: 9780670049688

14 Shivshankar Menon (2016) – Choices: Inside the Making of India's Foreign Policy – Penguin. ISBN: 9780143429111

15 Arvind Gupta (2014) – How India Manages Its National Security – Penguin Books. ISBN: 9780670088731

16 Rajesh Basrur (2006) – Minimum Deterrence and India's Nuclear Security – Stanford University Press. ISBN: 9780804752600

17 Stephen P. Cohen (2002) – India: Emerging Power – Brookings Institution Press. ISBN: 9780815716325

18 Christine Fair (2014) – Fighting to the End: The Pakistan Army's Way of War – Oxford University Press. ISBN: 9780199892706

19 Ashley J. Tellis (2001) – India's Emerging Nuclear Posture – RAND Corporation. ISBN: 9780833028917

20 Bharat Karnad (2015) – Why India is Not a Great Power (Yet) – Oxford University Press. ISBN: 9780199459220

21 Ministry of Defence Annual Reports (2019–2024), Govt. of India

22 ORF Reports on Strategic Affairs (Observer Research Foundation)

23 IDSA Monographs on Nuclear Doctrine and Defence Policy

24 Carnegie India Policy Briefs on Indo-Pacific

25 SIPRI Yearbook (Stockholm International Peace Research Institute)

26 K. Subrahmanyam – Shedding Shibboleths: India's Evolving Strategic Outlook – Wordsmiths – ISBN: 9788172234315

27 Bharat Karnad – India's Nuclear Policy – Praeger Security International – ISBN: 9780275995244

28 Ministry of Defence, Government of India – Annual Reports (2010–2023)

29 NITI Aayog – Strategic Vision for Defence Sector

30 SIPRI Yearbooks – Stockholm International Peace Research Institute

31 ORF Occasional Papers on Strategic Affairs